IJMRSETM

e-ISSN: 2395 - 7639

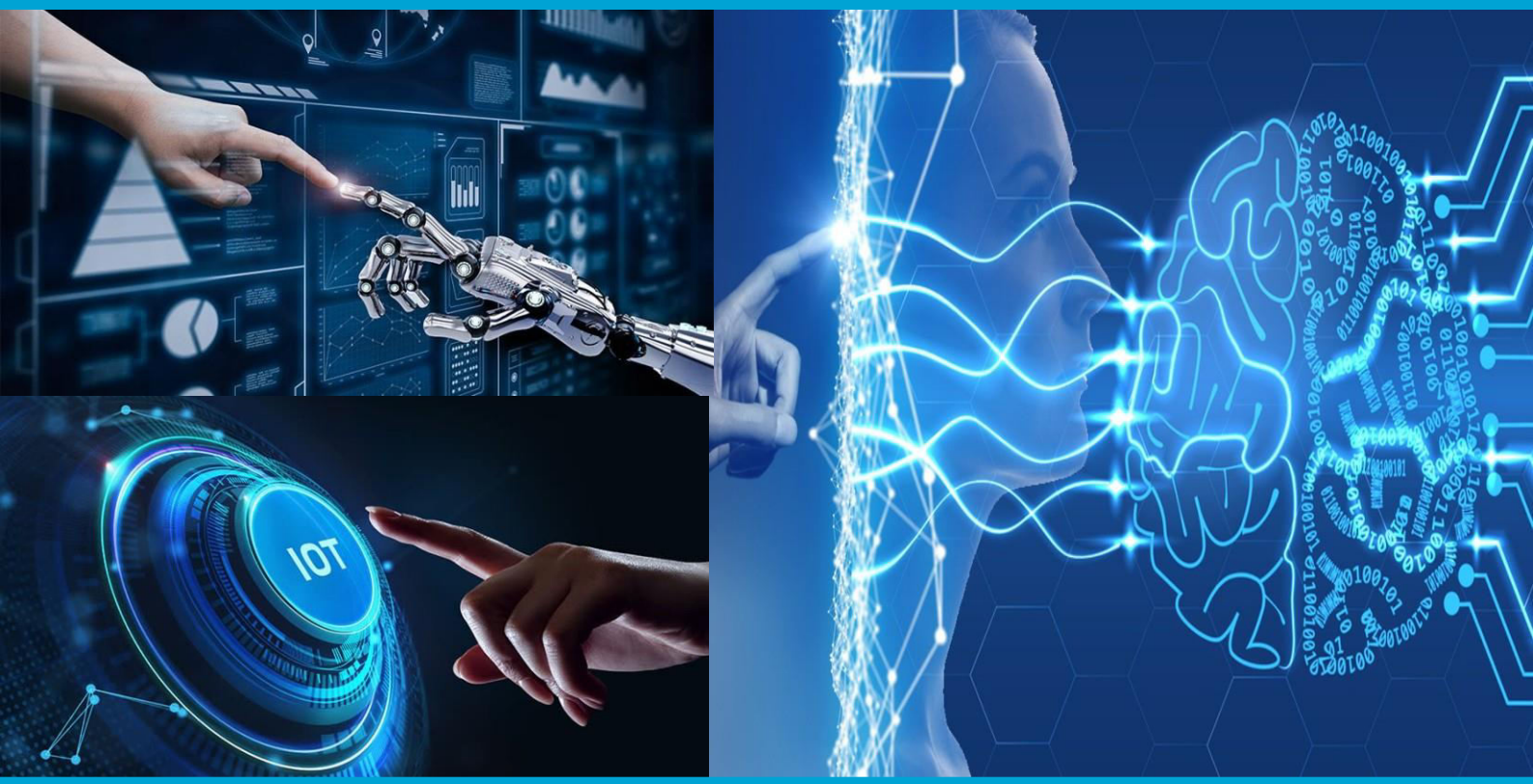

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

IN SCIENCE, ENGINEERING, TECHNOLOGY AND MANAGEMENT

Volume 8, Issue 12, December 2021

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 7.580

| ISSN: 2395-7639| www.ijmrset.com| Impact Factor: 7.580 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

|| Volume 8, Issue 12, December 2021 ||

सल्तनतकालीन प्रशासनिक व्यवस्था का एक ऐतिहासिक अध्ययन

Arvind Sulania

ASSISTANT PROFESSOR, DEPARTMENT OF HISTORY, DR. BHIM RAO AMBEDKAR GOVT. COLLEGE, SRI GANGANAGAR, RAJASTHAN, INDIA

सार: दिल्ली सल्तनत में एक प्रशासनिक व्यवस्था थी जहां सुल्तान का स्थान शीर्ष था तथा अमीरों (रईसों), मंत्रियों, अधिकारियों और अन्य विभिन्न लोगों की सहायता से एक बड़े क्षेत्र पर शासन और प्रशासन करता था। पूर्ण शक्तियों के साथ, वह राज्य का कानूनी मुखिया, सेना का प्रमुख और न्यायिक मामलों में उसे सर्वोच्च अधिकार था।

I. परिचय

दिल्ली सल्तनत के दौरान प्रशासन शरीयत या इस्लाम के कानूनों पर आधारित था। राजनीतिक, कानूनी
और सैन्य अधिकार सुल्तान के पास थे। इस प्रकार सैन्य शक्ति सिंहासन के उत्तराधिकार में मुख्य कारक थी। प्रशासनिक इकाइयाँ इक्ता, शिक, परगना और ग्राम थीं।[1,2,3]

दिल्ली सल्तनत के दौरान प्रशासन पूरी तरह से मुस्लिम कानूनों पर निर्भर था जो शरीयत या इस्लाम के कानून थे। सुल्तानों और रईसों का प्राथमिक कर्तव्य राज्य के मामलों में शरीयत या इस्लामी कानूनों का पालन करना था। इस अवधि ने सही ढंग से बताया कि दिल्ली सल्तनत का प्रशासन काफी हद तक उनके धर्म से प्रभावित था।
दिया गया चित्र दिल्ली सल्तनत के केंद्रीय प्रशासन को दर्शाता है।

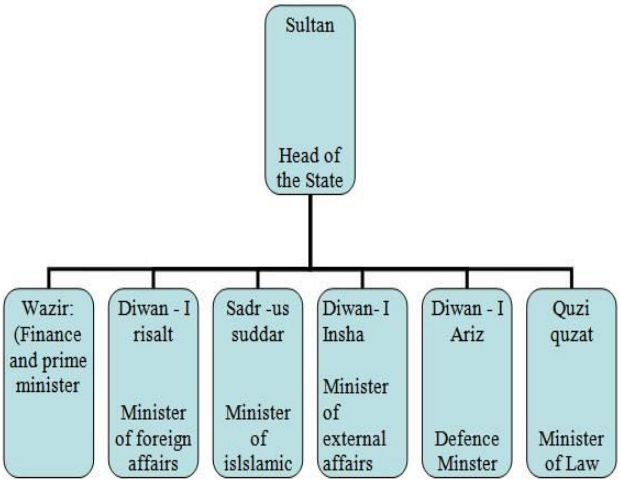

विचार-विमर्श

दिल्ली सल्तनत के केंद्रीय प्रशासन में एक बहुत ही व्यवस्थित और सुनियोजित प्रशासन प्रक्रिया का पालन किया जाता था, जिसे अलग-अलग मंत्रियों द्वारा चलाया जाता था, जिन्हें विशिष्ट कार्य सौंपे जाते थे। इसके अलावा, कई अन्य विभाग भी थे और सुल्तान ने अपने अधिकारियों को विशिष्ट कर्तव्यों को पूरा करने के लिए नियुक्त किया था।
1. सुल्तान - राज्य का मुखिया था और राज्य गतिविधि के हर क्षेत्र में असीमित शक्तियों का आनंद लेता था।
2. नायब - सुल्तान के बराबर एक समकक्ष स्थिति का आनंद लेता था।
3. वज़ीर - राज्य का प्रधान मंत्री था और वित्तीय विभाग का प्रमुख था।
4. दीवान-ए-आरिज़ - वह दीवानी-ए-आरिज़ विभाग का प्रमुख था और उस क्षमता में सैन्य विभाग का नियंत्रक-जनरल था।
5. दीवान-ए-रिसालत - धार्मिक मामलों का विभाग और मुख्य सदर के नेतृत्व में था।
6. अमीर-ए-मजलिस-शाही - वह मंत्री था, जो राज्य के त्योहारों की देखभाल करता था, और त्योहारों के मौसम में सभी सार्वजनिक

| ISSN: 2395-7639| www.ijmrset.com| Impact Factor: 7.580 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

|| Volume 8, Issue 12, December 2021 ||

सुविधाओं और व्यवस्थाओं को सुनिश्चित करता था।
7. दीवान-ए-इंशा - वह मंत्री था जो स्थानीय पत्राचार और विभिन्न कार्यालयों की देखभाल करता था।
दिल्ली सल्तनत के दौरान प्रशासन
दिल्ली सल्तनत को छोटे-छोटे प्रांतों में विभाजित किया गया था, ताकि मंत्रियों के लिए प्रशासन में उनकी मदद करना सुविधाजनक हो। उन्हें IQTAS कहा जाता था।
इक्ता प्रणाली
• इक्तादारी भूमि वितरण और प्रशासनिक व्यवस्था का एक अनूठा प्रकार था जो इल्तुतमिश की सल्तनत के दौरान विकसित हुआ।
• इस प्रणाली के तहत, पूरा साम्राज्य बहुत समान रूप से जमीन के कई बड़े और छोटे भूखंडों में विभाजित था, जिन्हें इक्ता कहा जाता था।
• आसान और दोषरहित प्रशासन और राजस्व संग्रह के उद्देश्य से जमीन के ये भूखंड विभिन्न रईसों, अधिकारियों और सैनिकों को सौंपे गए थे।
• इक्ता हस्तांतरणीय थे, यानी इक्ता धारकों-इक्तादारों-को हर तीन से चार साल में एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में स्थानांतरित कर दिया जाता था।
• छोटे इक्ता के धारक व्यक्तिगत सैनिक होते थे। उनके पास कोई प्रशासनिक जिम्मेदारियां नहीं थीं।
• 1206 ई. में सक्षम राजा मुहम्मद ग़ौर ने भारत में इक्ता प्रणाली शुरू करने वाले पहले व्यक्ति थे शुरू में इक्ता एक राजस्व देने वाली ज़मीन थी जिसे वेतन के बदले में दिया जाता था[4,5,6]। हालाँकि, फ़िरोज़ शाह तुगलक के शासनकाल में, 1351 ई. में, यह वंशानुगत हो गया।
स्थानीय प्रशासन
• स्थानीय प्रशासन अस्पष्ट और अपरिभाषित था और मूल रूप से एक पारंपरिक प्रणाली थी।
• इस अवधि में प्रांतों को शिक्दा के नेतृत्व में 6 भागों में विभाजित किया गया था
। • मुख्य कार्य कानून और व्यवस्था बनाए रखना और ज़मींदारों के उत्पीड़न से लोगों की रक्षा करना था और उन्हें सैन्य दायित्वों का पालन करना था।
• शिक को आगे परगना में विभाजित किया गया था और उनके अलग-अलग अधिकारी थे जिनमें से कुछ थे-
1. आमिल- वे अधिकारी जो भूमि राजस्व और अन्य कर एकत्र करते थे।
2. मुश्रीफ
3. हजमदार- कोषाध्यक्ष जो वित्त को नियंत्रण में रखते थे।
4. काजी- सिविल अधिकारी, जो विकास संबंधी रिकॉर्ड रखते थे।
5. शिकदार- आपराधिक अधिकारी और कानून निर्माता।
6. कोतवाल- शिकदार के अधीन पुलिस प्रमुख।
7. फौजदार- किले और उसके आस-पास के क्षेत्रों का प्रभारी सैन्य अधिकारी।
8. अमीन- भूमि को मापने और उनके उपयोग को आवंटित करने के प्रभारी अधिकारी।
9. कानूनगो- उपज और मूल्यांकन के पिछले रिकॉर्ड बनाए रखते थे।
10. पटवारी- गांव का रिकॉर्ड रखने वाला

II. परिणाम

दिल्ली सल्तनत प्रशासन
दिल्ली सल्तनत काल 1206 ई. से 1526 ई. तक लगभग 320 वर्षों तक फैला रहा।

प्रशासन

- दिल्ली सल्तनत के तहत प्रभावी प्रशासनिक व्यवस्था ने भारतीय प्रांतीय राज्यों और बाद में मुगल प्रशासनिक व्यवस्था पर बहुत प्रभाव डाला । अपने चरम पर, दिल्ली सल्तनत ने मदुरै जैसे दक्षिण के क्षेत्रों को नियंत्रित किया।
- तुर्की शासक महमूद गजनवी ने सबसे पहले सुल्तान की उपाधि धारण की थी । दिल्ली सल्तनत एक इस्लामी राज्य था जिसका धर्म इस्लाम था। सुल्तानों को खलीफा का प्रतिनिधि माना जाता था। खलीफा का नाम खुतबा (प्रार्थना) में शामिल किया जाता था और उनके सिक्कों पर भी अंकित किया जाता था। इस प्रथा का पालन बलबन ने भी किया, जिसने खुद को "ईश्वर की छाया" कहा। इल्तुतमिश, मुहम्मद बिन तुगलक और फिरोज तुगलक ने खलीफा से 'मंसूर' (निवेश पत्र) प्राप्त किया ।
- कानूनी, सैन्य और राजनीतिक गतिविधियों के लिए अंतिम अधिकार सुल्तान के पास था। सुल्तान के सभी बेटों का सिंहासन पर समान अधिकार था क्योंकि उस समय कोई स्पष्ट उत्तराधिकार कानून नहीं था। इल्तुतमिश ने अपनी बेटी रजिया को अपने बेटों के ऊपर मनोनीत भी किया था। हालाँकि, ऐसे मनोनयन को रईसों द्वारा स्वीकार किया जाना था। कई बार, उलेमाओं ने भी अनुकूल जनमत प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। फिर भी, उत्तराधिकार के मामले में सैन्य शक्ति मुख्य कारक थी।
- केंद्रीय प्रशासन

| ISSN: 2395-7639| www.ijmrset.com| Impact Factor: 7.580 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

|| Volume 8, Issue 12, December 2021 ||

- कई विभाग और अधिकारी थे जो प्रशासन में सुल्तान की मदद करते थे। नायब सबसे प्रभावशाली पद था और उसे सुल्तान की लगभग सभी शक्तियाँ प्राप्त थीं। उसका अन्य सभी विभागों पर नियंत्रण था। वज़ीर का पद नायब के बाद था और वह वित्त विभाग का प्रमुख था जिसे दीवान-ए-विजारत के नाम से जाना जाता था। व्यय की जाँच के[7,8,9] लिए एक महालेखा परीक्षक और आय की जाँच के लिए एक महालेखाकार वज़ीर के अधीन काम करता था। फिरोज शाह तुगलक खान-ए-जहाँ के वज़ीर-काल को आम तौर पर वज़ीर के प्रभावों का उच्चतम जल चिह्न काल माना जाता है ।
- दीवान-ए-आरिज़ सैन्य विभाग था जिसकी कमान आरिज़-ए-मुमालिक के पास थी । वह सैनिकों की भर्ती करता था और सैन्य विभाग का प्रशासन करता था। हालाँकि, सुल्तान खुद सेना के कमांडर-इन-चीफ के रूप में काम करता था। अलाउद्दीन खिलजी के शासनकाल के दौरान, विभाग में सैनिकों की संख्या लगभग तीन लाख थी। दक्ष सेना ने दक्खन विस्तार के साथ-साथ मंगोल आक्रमणों को रोकने में मदद की। तुर्कों के पास युद्ध के उद्देश्यों के लिए बड़ी संख्या में उचित रूप से प्रशिक्षित हाथी भी थे। घुड़सवार सेना को प्रमुख महत्व दिया जाता था और उसे अधिक प्रतिष्ठित माना जाता था।

- धार्मिक मामलों का विभाग, दीवान-ए-रिसालत धार्मिक संस्थाओं से संबंधित था और योग्य विद्वानों और धर्मपरायण लोगों को वजीफा देता था। इस विभाग ने मदरसों, मकबरों और मस्जिदों के निर्माण के लिए धन दिया। इसका नेतृत्व मुख्य सदर करता था जो न्यायिक व्यवस्था के प्रमुख मुख्य काजी के रूप में भी कार्य करता था । सल्तनत के विभिन्न भागों में अन्य न्यायाधीशों और काजियों की नियुक्ति की गई थी। दीवानी मामलों में शरिया या मुस्लिम पर्सनल लॉ का पालन किया जाता था। हिंदुओं पर उनके अपने पर्सनल लॉ का शासन था और उनके मामलों का निपटारा ग्राम पंचायत द्वारा किया जाता था। आपराधिक कानून सुल्तानों द्वारा स्थापित नियमों और विनियमों द्वारा तय किया जाता था। दीवान-ए-इंशा पत्राचार का विभाग था। शासक और अन्य राज्यों के शासकों के साथ-साथ उसके कनिष्ठ अधिकारियों के बीच सभी पत्राचार का प्रबंधन इस विभाग द्वारा किया जाता था।
- प्रांतीय सरकार
- इक्ता , दिल्ली सल्तनत के अंतर्गत आने वाले प्रांत शुरू में रईसों के अधीन थे। मुक्ती या वालिस प्रांतों के राज्यपालों को दिया जाने वाला नाम था और वे कानून और व्यवस्था बनाए रखने और भूमि राजस्व एकत्र करने के लिए जिम्मेदार थे। प्रांतों को आगे शिक में विभाजित किया गया था, जो शिकदार के नियंत्रण में था । शिक को आगे परगना में विभाजित किया गया था , जिसमें कई गाँव शामिल थे और जिसका नेतृत्व आमिल करता था । गाँव प्रशासन की मूल इकाई बना रहा और इसके मुखिया को चौधरी या मुकद्दम कहा जाता था। पटवारी गाँव का लेखाकार था।

Iqtas (Province) ⇒ Muqtis or Walis (governor)

⇓

Shiqs (District) ⇒ Shiqdar

⇓

Pargana (Sub districts) ⇒ Amil

⇓

Village ⇒ Muqaddam or Chaudhri.

दिल्ली सल्तनत की अर्थव्यवस्था

- दिल्ली सल्तनत के तहत राजस्व विभाग में कुछ भूमि सुधार लागू किए गए। भूमि को तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया-
  - इक्ता भूमि - वह भूमि जो अधिकारियों को उनकी सेवाओं के भुगतान के बदले इक्ता के रूप में आवंटित की जाती थी।[10,11,12]
  - खलीसा भूमि - यह सीधे सुल्तान के नियंत्रण में थी और इससे प्राप्त राजस्व का उपयोग शाही दरबार और शाही परिवार के रखरखाव के लिए किया जाता था।
  - इनाम भूमि - यह धार्मिक संस्थाओं या धार्मिक नेताओं को आवंटित की जाती थी।
- किसान अपनी उपज का एक तिहाई हिस्सा भू-राजस्व के रूप में देते थे और कभी-कभी तो आधी उपज भी। उन्हें अन्य कर भी देने पड़ते थे और वे दयनीय जीवन जीते थे। हालाँकि, मुहम्मद बिन तुगलक और फिरोज तुगलक जैसे सुल्तानों ने बेहतर सिंचाई सुविधाएँ और तक्कवी ऋण भी प्रदान किए, जिससे कृषि उत्पादन में वृद्धि हुई। उन्होंने जौ के बजाय गेहूँ जैसी फसलों की खेती को भी बढ़ावा दिया। मुहम्मद बिन तुगलक ने एक अलग कृषि विभाग, दीवान-ए-कोही की स्थापना की थी। फिरोज तुगलक ने बागवानी क्षेत्र के विकास को बढ़ावा दिया।
- इस अवधि के दौरान कई शहरों और कस्बों का विकास हुआ, जिससे शहरीकरण में तेज़ी आई। महत्वपूर्ण शहर थे - मुल्तान, लाहौर (उत्तर-पश्चिम), अनहिलवाड़ा, कैम्बे, भड़ौच (पश्चिम), लखनौती और कड़ा (पूर्व), जौनपुर, दौलताबाद और दिल्ली। दिल्ली

| ISSN: 2395-7639| www.ijmrset.com| Impact Factor: 7.580 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

|| Volume 8, Issue 12, December 2021 ||

पूर्व का सबसे बड़ा शहर था। बड़ी संख्या में वस्तुओं का निर्यात फारस की खाड़ी के देशों और पश्चिम एशिया और दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों में किया जाता था। विदेशी व्यापार पर खुरासानियों (अफ़गान मुसलमान) और मुल्तानियों (ज़्यादातर हिंदू) का प्रभुत्व था। अंतर्देशीय व्यापार गुजराती, मारवाड़ी और मुस्लिम बोहरा व्यापारियों के नियंत्रण में था। ये व्यापारी अमीर थे और विलासितापूर्ण जीवन जीते थे।

- यातायात और संचार को सुगम बनाने के लिए सड़कें बनाई गईं और उनका रख-रखाव किया गया। शाही सड़कों को खास तौर पर अच्छी हालत में रखा गया। पेशावर से सोनारगांव तक शाही सड़क के अलावा, मुहम्मद बिन तुगलक ने दौलताबाद तक एक सड़क बनवाई। यात्रियों के लाभ के लिए राजमार्गों पर सरायों या विश्रामगृहों का निर्माण किया गया।
- दिल्ली सल्तनत के दौरान रेशम और सूती वस्त्र उद्योग खूब फला-फूला। बड़े पैमाने पर रेशम उत्पादन की शुरुआत ने भारत को कच्चे रेशम के आयात के लिए दूसरे देशों पर कम निर्भर बना दिया। 14वीं और 15वीं शताब्दी से कागज का व्यापक रूप से उपयोग किया जाने लगा, जिससे कागज उद्योग का विकास हुआ। कालीन बुनाई, चमड़ा बनाने और धातु शिल्प जैसे अन्य शिल्प भी उनकी मांग में वृद्धि के कारण फले-फूले। सुल्तान और उसके परिवार की ज़रूरत का सामान शाही कारखानों द्वारा आपूर्ति किया जाता था। शाही कारखानों द्वारा सोने और चांदी से बने महंगे सामान बनाए जाते थे। रईसों को अच्छा वेतन दिया जाता था और वे सुल्तानों की जीवनशैली की नकल करते थे और एक सुखद जीवन जीते थे।
- दिल्ली सल्तनत के दौरान सिक्का प्रणाली में भी तेजी आई थी। इल्तुतमिश ने कई तरह के टंका जारी किए थे। खिलजी शासन के दौरान , एक टंका 48 जीतल में विभाजित था और तुगलक शासन के दौरान 50 जीतल में। अलाउद्दीन खिलजी द्वारा दक्षिण भारतीय विजय के बाद, सोने के सिक्के या दीनार लोकप्रिय हो गए। तांबे के सिक्के कम संख्या में और बिना तारीख के थे। मुहम्मद बिन तुगलक ने टोकन मुद्रा के साथ प्रयोग किया और विभिन्न प्रकार के सोने और चांदी के सिक्के भी जारी किए। सिक्के अलग-अलग जगहों पर ढाले गए थे। उसने कम से कम पच्चीस अलग-अलग तरह के सोने के सिक्के जारी किए।
- तुर्कों ने अनेक शिल्पों और तकनीकों को लोकप्रिय बनाया, जैसे लोहे की रकाब का प्रयोग, कवच का प्रयोग (सवार और घोड़े दोनों के लिए), रहट (फारसी पहिया जो गहरे स्तर से पानी को ऊपर उठाने में मदद करता था) में सुधार, चरखा और कालीन बुनाई के लिए उन्नत करघा, बेहतर गारे का प्रयोग, जिससे मेहराब और गुंबद पर आधारित शानदार इमारतों का निर्माण करने में मदद मिली, आदि।

दिल्ली सल्तनत सामाजिक व्यवस्था

दिल्ली सल्तनत के दौरान हिंदू समाज की संरचना में शायद ही कोई बदलाव हुआ हो। ब्राह्मणों को सामाजिक स्तर पर सर्वोच्च स्थान प्राप्त था। चांडालों और अन्य बहिष्कृत लोगों के साथ घुलने-मिलने पर सबसे कठोर प्रतिबंध लगाए गए थे। इस अवधि के दौरान, महिलाओं को एकांत में रखने और बाहरी लोगों की उपस्थिति में उन्हें अपना चेहरा ढकने के लिए कहने की प्रथा (पर्दा प्रथा) उच्च वर्ग के हिंदुओं (विशेष रूप से उत्तर भारत में) के बीच प्रचलित हो गई। अरब और तुर्क पर्दा प्रथा को भारत में लाए और यह समाज में उच्च वर्गों का प्रतीक बन गया। सती प्रथा देश के विभिन्न क्षेत्रों में व्यापक रूप से प्रचलित थी। इब्न बतूता ने उल्लेख किया है कि सती होने के लिए सुल्तान से अनुमति लेनी पड़ती थी।

सल्तनत काल के दौरान मुस्लिम समाज जातीय और नस्लीय [13,14,15] समूहों में विभाजित रहा। अफगान, ईरानी, तुर्क और भारतीय मुसलमान अलग-अलग समूहों के रूप में विकसित हुए और शायद ही कभी एक-दूसरे से शादी करते थे। हिंदुओं के निचले तबके से धर्म परिवर्तन करने वालों के साथ भी भेदभाव किया जाता था।

सिंध पर अरबों के आक्रमण के समय से ही हिंदू प्रजा को ज़िम्मी या संरक्षित लोगों का दर्जा दिया गया था यानी वे लोग जो मुस्लिम शासन को स्वीकार करते थे और जजिया नामक कर चुकाने के लिए सहमत होते थे । पहले जजिया को भू-राजस्व के साथ वसूला जाता था। बाद में फिरोज तुगलक ने जजिया को एक अलग कर बना दिया और इसे ब्राह्मणों पर भी लगाया , जिन्हें पहले जजिया से छूट दी गई थी।

भारत में गुलामी की प्रथा लंबे समय से चली आ रही थी, लेकिन इस दौरान यह खूब फली-फूली। पुरुषों और महिलाओं के लिए गुलामों के बाजार मौजूद थे। गुलामों को आम तौर पर घरेलू सेवा, कंपनी या उनके विशेष कौशल के लिए खरीदा जाता था। फिरोज शाह तुगलक के पास करीब 1,80,000 गुलाम थे।

दिल्ली सल्तनत – कला और वास्तुकला

कला और वास्तुकला इस्लामी और भारतीय शैलियों का एक संयोजन था जिसने दिल्ली सल्तनत के दौरान एक नई दिशा ली। गुंबद, मेहराब, ऊंची मीनारें, मीनारें, इस्लामी लिपि तुर्कों द्वारा शुरू की गई थी। हिंदू मंदिरों के शिखर के विपरीत मस्जिदों की प्रमुख विशेषता गुंबद है।

दिल्ली के सुल्तानों को वास्तुकला में गहरी रुचि थी। उनकी वास्तुकला भारतीय और इस्लामी शैलियों का मिश्रण थी।

| ISSN: 2395-7639| www.ijmrset.com| Impact Factor: 7.580 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

|| Volume 8, Issue 12, December 2021 ||

कुतुब मीनार 73 मीटर ऊंची एक विशाल मीनार है जिसका निर्माण कुतुब-उद-दीन ऐबक ने करवाया था और इसे इल्तुतमिश ने सूफी संत कुतुब-उद-दीन बख्तियार काकी की याद में पूरा करवाया था। बाद में अलाउद्दीन खिलजी ने कुतुब मीनार के प्रवेश द्वार का निर्माण करवाया जिसे अलाई दरवाजा कहा जाता है।

तुगलकाबाद का महल परिसर गयासुद्दीन तुगलक के शासनकाल के दौरान बनाया गया था। मुहम्मद बिन तुगलक ने गयासुद्दीन तुगलक का मकबरा एक ऊंचे चबूतरे पर बनवाया था। उन्होंने दिल्ली के शहरों में से एक जहाँपनाह भी बनवाया। फिरोज शाह तुगलक ने मौज-मस्ती के लिए एक रिसॉर्ट हौज खास बनवाया और फिरोज शाह कोटला किला भी बनवाया। तुगलक शासकों ने मकबरों का निर्माण ऊंचे चबूतरे पर करवाना शुरू किया। दिल्ली में लोधी गार्डन लोधी की वास्तुकला का एक उदाहरण है।
तीन सुविकसित वास्तुकला शैलियाँ थीं:

1. दिल्ली या शाही शैली
2. प्रांतीय शैली
3. हिंदू स्थापत्य शैली

अवधि	उदाहरण
मामलुक	• कुतुब मीनार • कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद • नासिरुद्दीन मुहम्मद की कब्रें • दिल्ली में नया शहर सिरी
खिलजी	• हज़रत निज़ाम-उद-दीन औलिया की दरगाह • अलाई दरवाजा
लोदी	• लोदी गार्डन • नई दिल्ली में मोती मस्जिद • सिकंदर लोदी का मकबरा

दिल्ली सल्तनत संगीत
इस अवधि के दौरान सारंगी और रबाब जैसे नए संगीत वाद्ययंत्रों का प्रचलन हुआ। साथ ही, अमीर खुसरो ने घोरा और सनम जैसे नए रागों का प्रचलन शुरू किया। उन्हें ईरानी और भारतीय संगीत प्रणालियों को मिलाकर कव्वाली बनाने का श्रेय भी दिया जाता है। उन्होंने सितार का भी आविष्कार किया। भारतीय शास्त्रीय रचना रागदर्पण का फिरोज शाह तुगलक के शासन के दौरान फारसी में अनुवाद किया गया था। पीर भोदान एक सूफी संत थे जिन्हें अपने युग का सबसे महान संगीतकार माना जाता था। ग्वालियर के राजा मान सिंह संगीत के महान संरक्षक थे और उन्होंने संगीत पर मन कौतूहल नामक महान रचना की रचना को प्रोत्साहित किया।
दिल्ली सल्तनत साहित्य

दिल्ली के सुल्तानों ने साहित्य को बहुत महत्व दिया और फारसी साहित्य की प्रगति में अधिक रुचि दिखाई ।[16,17]

- काव्य और धर्मशास्त्र के अलावा इतिहास लेखन को भी बढ़ावा दिया गया।
    - इस समय के सबसे प्रसिद्ध इतिहासकार मिनहाज-उस-सिराज, जिया-उद-दीन बरनी, हसन निजामी और शम्स सिराज थे ।
    - तबकात-ए-नसारी की रचना मिनहाज-उस-सिराज ने की थी, जो लगभग 1260 ई. तक के मुस्लिम राजवंशों के इतिहास का सामान्य विवरण देती है।
    - तुगलक वंश का इतिहास, तारीख-ए-फिरोज बरनी द्वारा लिखा गया था।
- सुल्तान बलबन के सबसे बड़े पुत्र राजकुमार मुहम्मद विद्वानों के महान संरक्षक थे और उन्होंने अपने समय के दो महान विद्वानों अर्थात् अमीर खुसरो और अमीर हसन को संरक्षण प्रदान किया था ।
- अमीर ख़ुसरो को अपने युग का सबसे महान फ़ारसी कवि माना जाता है।
    - ऐसा कहा जाता है कि उन्होंने 4 लाख से अधिक दोहे लिखे हैं।
    - उन्होंने फ़ारसी कविता की एक नई शैली बनाई जिसे सबक-ए-हिंद (भारतीय शैली) कहा जाता है।
    - उनकी महत्वपूर्ण कृतियों में ख़ज़ाईन-उल-फ़ुतूह, तुगलकनामा और तारीख-ए-अलाई शामिल हैं ।
    - वह एक महान गायक थे और उन्हें 'भारत का तोता' की उपाधि दी गई थी।
- इस काल में कुछ संस्कृत पुस्तकों का फ़ारसी भाषा में अनुवाद किया गया। ज़िया नक्शबी संस्कृत कहानियों का फ़ारसी भाषा में अनुवाद करने वाले पहले व्यक्ति थे।
- टूटू नामा या तोते की पुस्तक का पहले तुर्की भाषा में और फिर कई यूरोपीय भाषाओं में अनुवाद किया गया।
- कल्हण द्वारा लिखित प्रसिद्ध पुस्तक राजतरंगणी कश्मीरी शासक जैन-उल-अबिदीन के काल की थी।

| ISSN: 2395-7639| www.ijmrset.com| Impact Factor: 7.580 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

|| Volume 8, Issue 12, December 2021 ||

- अरबी भाषा में अल-बरूनी की किताब-उल-हिंद सबसे महत्वपूर्ण रचना है।
  - अल-बरूनी या अलबरूनी एक अरबी और फ़ारसी विद्वान था जिसे महमूद ग़ज़नी का संरक्षण प्राप्त था।
  - उन्होंने संस्कृत सीखी और दो संस्कृत कृतियों का अरबी में अनुवाद किया।
  - वे उपनिषदों और भगवद्गीता से प्रभावित थे।
  - अपनी कृति किताब -उल-हिंद (जिसे तारीख-उल-हिंद भी कहा जाता है) में उन्होंने भारत की सामाजिक-आर्थिक स्थितियों का उल्लेख किया था।
- प्रांतीय शासकों के दरबार में भी बड़ी संख्या में विद्वान विकसित हुए। हिंदी कवि चंदबरदाई पृथ्वीराज रासौ के लेखक थे।
- नुसरत शाह ने महाभारत का बंगाली में अनुवाद करवाया । कृत्तिवास ने रामायण का संस्कृत से बंगाली[18,19] अनुवाद तैयार किया।

III. निष्कर्ष

भूमि को भी तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया था, अर्थात् इक्ता भूमि, खलीसा भूमि और इनाम भूमि। इक्ता भूमि वह भूमि थी जो अधिकारियों को उनकी सेवाओं के भुगतान के बदले इक्ता के रूप में सौंपी जाती थी। दूसरी ओर खलीसा भूमि सुल्तान के सीधे नियंत्रण में थी। इससे एकत्र राजस्व शाही दरबार और शाही घराने के रखरखाव के लिए खर्च किया जाता था। और अंतिम इनाम भूमि है जिसे धार्मिक नेताओं या धार्मिक संस्थानों को सौंपा या दिया जाता था।

इसलिए हम यह समझ सकते हैं कि दिल्ली सल्तनत की स्थापना और विस्तार ने एक शक्तिशाली और कुशल प्रशासनिक प्रणाली के विकास को जन्म दिया। अपने चरम पर, दिल्ली के सुल्तानों का अधिकार मदुरै तक दक्षिण में फैल गया था। उन्हें आज भी उनकी बहुत व्यवस्थित प्रशासनिक क्षमताओं के लिए याद किया जाता है। हालाँकि दिल्ली सल्तनत बिखर गई थी, लेकिन उनकी प्रशासनिक प्रणाली ने भारतीय प्रांतीय राज्यों और बाद में मुगल प्रशासन प्रणाली पर एक शक्तिशाली प्रभाव डाला।[20]

संदर्भ

1. "Arabic and Persian Epigraphical Studies - भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण". Asi.nic.in. मूल से 29 सितंबर 2011 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2010-11-14.
2. ↑ पीटर जैक्सन, The Delhi Sultanate: A Political and Military History Archived 2014-10-26 at the वेबैक मशीन, (2003), कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय प्रेस. p.28. ISBN 0521543290
3. ↑ प्रदीप बरुआ The State at War in South Asia, ISBN 978-0803213449, पृष्ठ 29-30
4. ↑ रिचर्ड ईटन (2000), Temple Desecration and Indo-Muslim States Archived 2015-09-20 at the वेबैक मशीन, Journal of Islamic Studies, 11(3), pp 283-319
5. ↑ A. Welch, "Architectural Patronage and the Past: The Tughluq Sultans of India," Muqarnas 10, 1993, ब्रिल पब्लिशर, पृष्ठ 311-322
6. ↑ जे. ए. पेज, Guide to the Qutb Archived 2014-07-27 at the वेबैक मशीन, Delhi, Calcutta, 1927, पृष्ठ 2-7
7. ↑ Bowering et al., The Princeton Encyclopedia of Islamic Political Thought, ISBN 978-0691134840, प्रिंसटन विश्विद्यालय प्रेस
8. ↑ इस तक ऊपर जायें:अ आ देखें:
   a. M. Reza Pirbha, Reconsidering Islam in a South Asian Context, ISBN 978-9004177581, Brill
   b. Richards J. F. (1974), The Islamic frontier in the east: Expansion into South Asia, Journal of South Asian Studies, 4(1), pp. 91-109
   c. Sookoohy M., Bhadreswar - Oldest Islamic Monuments in India, ISBN 978-9004083417, Brill Academic; see discussion of earliest raids in Gujarat
9. ↑ इस तक ऊपर जायें:अ आ इ ई Peter Jackson (2003), The Delhi Sultanate: A Political and Military History, Cambridge University Press, ISBN 978-0521543293, pp 3-30
10. ↑ T. A. Heathcote, The Military in British India: The Development of British Forces in South Asia:1600-1947, (Manchester University Press, 1995), pp 5-7
11. ↑ Barnett, Lionel (1999), Antiquities of India: An Account of the History and Culture of Ancient Hindustan, p. 1, गूगल बुक्स पर, Atlantic pp. 73–79
12. ↑ Richard Davis (1994), Three styles in looting India, History and Anthropology, 6(4), pp 293-317, doi:10.1080/02757206.1994.9960832
13. ↑ MUHAMMAD B. SAM Mu'izz AL-DIN, T.W. Haig, Encyclopaedia of Islam, Vol. VII, ed. C.E.Bosworth, E.van Donzel, W.P. Heinrichs and C. Pellat, (Brill, 1993)
14. ↑ C.E. Bosworth, The Cambridge History of Iran, Vol. 5, ed. J. A. Boyle, John Andrew Boyle, (Cambridge University Press, 1968), pp 161-170

| ISSN: 2395-7639| www.ijmrset.com| Impact Factor: 7.580 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

|| Volume 8, Issue 12, December 2021 ||

15. ↑ History of South Asia: A Chronological Outline Archived 2013-12-11 at the वेबैक मशीन Columbia University (2010)
16. ↑ Muʿizz al-Dīn Muḥammad ibn Sām Archived 2012-11-20 at the वेबैक मशीन Encyclopedia Britannica (2011)
17. ↑ ब्रुस आर. गोर्डोन. "Nomads of the Steppe". My.raex.com. मूल से 20 मई 2014 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि 2012-01-20.
18. ↑ जैक्सन पी. (1990), The Mamlūk institution in early Muslim India, Journal of the Royal Asiatic Society of Great Britain & Ireland (New Series), 122(02), pp 340-358
19. ↑ सी.ई. बोसवर्थ, The New Islamic Dynasties, Columbia University Press (1996)
20. ↑ Barnett & Haig (1926), A review of History of Mediaeval India, from ad 647 to the Mughal Conquest - Ishwari Prasad, Journal of the Royal Asiatic Society of Great Britain & Ireland (New Series), 58(04), pp 780-783

Impact Factor: 7.580

INTERNATIONAL JOURNAL
OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH
IN SCIENCE, ENGINEERING, TECHNOLOGY AND MANAGEMENT

+91 99405 72462 +91 63819 07438 ijmrsetm@gmail.com